पं. लखमीचन्द के साहित्य में पारिवारिक चेतना : एक अध्ययन

पुनीता

शोधार्थी, हिंदी विभाग,

सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान।

निर्देशक : डॉ. सरोज चौधरी, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान ।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 4, (July-August 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

पंडित लखमीचन्द के अनुसार परिवार समाज की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। मनुष्य का जन्म परिवार में होता है तथा परिवार में ही वह पला-बड़ा अर्थात् पालन-पोषण होता है। एकसुखी परिवार का निर्माण-अच्छी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र तथा परिश्रमी व्यक्ति के द्वारा होता है। साधारण शब्दों में, "माता-पिता और सन्तान, उनके योग से ही 'परिवार' बना है।" परिवार की वृद्धि के साथ-साथ परिवार में भी उसके सदस्य अपने-अपने कर्त्तव्यों को समझते हैं और उनका पालन करते हुए निर्धारित कार्यों को कहते हैं। डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा के अनुसार, "परिवार मानव समाज की प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण संस्था है। परिवार सामाजिक जीवन की प्रारंभिक इकाई है। परिवार के क्रमशः विकास के साथ ही सामाजिक संबंधों का विकास होता है।"

परिचय

परिवार के सदस्यों में माता-पिता मुख्य सदस्य होते हैं। वे परिवार के आधार-बिन्दु है। अपने बच्चों के प्रति कर्त्तव्यों को पूरा करने में वे सदैव लगे रहते हैं। परिवार में नारी का दोहरा दायित्व होता है। वह दो कुलों की मान-मर्यादा तथा रक्षा करने में सक्षम मानी जाती है। "आधुनिक परिवार में चाहे कुछ भी हो, परंतु परिवार में नारी के महत्त्व को स्वीकारा है।"

नारी जब माता-पिता के घर होती है तो वहाँ की मर्यादा का ध्यान करके अपने प्रेम-भाव को परिवार के प्रति समर्पित कर देती है और जब वह ससुराल में होती है तो पति के घर-परिवार की वंश-वृद्धि करके अपने नारीत्व का प्रमाण देती है। सामान्य रूप से परिवार दो रूप के होते हैं।

(क) एकांगी परिवार

इस प्रकार के परिवार में केवल पति-पत्नी तथा उनके बच्चे ही सम्मिलित होते हैं। ऐसे परिवारों की संख्या आधुनिक समाज में अधिक पाई जाती है। कहा भी गया है कि 'छोटा परिवार, सुख का आधार' और 'छोटा परिवार, सुखी परिवार'। परिवार का वास्तविक आधार गृहस्थाश्रम है। परिवार के साथ-साथ समाज भी गृहस्थाश्रम पर आश्रित है।

(ख) संयुक्त परिवार

इसके अंतर्गत समस्त परिवार के सदस्य जैसे दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-भाई, माता-पिता, भाई-बहन सभी सम्मिलित होते है। डॉ. आच्युतानंद जी ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है, "एक परिवार, एक विचार, एक ध्यये और एकता की भावना से एकत्रित होकर एक ही स्थान पर एक ही पूर्वज के वंशज निवास कर सभी अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हो और उनके परस्पर घनिष्ठ खून का सम्बन्ध हो एवं जिनका दु:ख-सुख संयुक्त रूप से जिनमें सन्निहित हो, उस संगठित परिवार को ही संयुक्त परिवार कहते हैं।" एक अन्य विद्वान का मानना है कि संयुक्त परिवार उन लोगों का समूह है जो प्रायः एक ही घर में निवास करते हैं और जो एक साथ बैठाकर भोजन करते हैं, जिनका सम्पत्ति पर भी समान अधिकार हो, जो एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं।

पं. लखमीचन्द जी ने अपने साहित्य में एकांकी परिवार और संयुक्त परिवार दोनों का ही वर्णन किया गया है। नारी के बिना नहीं चल सकते। पं. जी के साहित्य में पारिवारिक चेतना में नारी की भूमिका का वर्णन अग्रलिखित है।

परिवार बच्चों के पालन-पोषण, संस्कार, आचार-व्यवहार आदि का आधार होता है। इसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत एक से दूसरी पीढ़ी को प्रसारित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। एकांगी परिवार में नारी की मानसिकता के दो पहलू हैं। एक तो वह अपने पति और बच्चों के साथखुश रहती है और दूसरा पक्ष ये है कि नारी पति से तंग आकर खुद को इस संसार में तन्हा समझती है।

एकांगी परिवार

आधुनिक युग में बहुत ही तेजी से बढ़ रहे हैं क्योंकि आज मनुष्य को अपने रोजगार की तलाश में घर से दूर जाना पड़ता है जिस कारण वह अपनी पत्नी और बच्चों को अपने नौकरी के स्थान पर ही ले जाता है इसके अलावा आज के भौतिकतावादी युग में सभी अपना अलग-अलग ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं जिस कारण से एकांगी (एकल) परिवार स्थापित होते जा रहे हैं। पं. लखमीचन्द के सांगों में एकल परिवारों का चित्रण हुआ है।

'ये छन्द लखमीचन्द नै टैरे, बेटा ला लिए जंगल मैं डेरे।'

संयुक्त परिवार

संयुक्त परिवार में सभी मिल-झुलकर रहते हैं। इसमें चाचा-चाची, ताऊ-ताई, दादा-दादी आदि सभी मिलकर जीवन-यापन करते है। आज के युग में संयुक्त परिवार बहुत कम मिलते है। आधुनिक युग में संयुक्त परिवार के जहाँ बहुत से लाभ है वही बहुत सी हानियाँ भी है। जहाँ संयुक्त परिवार में मुखिया की चलती है वहाँ सब ठीक-ठाक से सही चलता है पर जहाँ सब अपनी मनमान करने लगते हैं वहाँ समस्याएं आने लगती। आज के भौतिकवादी युग में सब अपना-अपना सुख चाहते है जिसके कारण सब अपना-अपना ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीना चाहते है जिस कारण दूरियां आनी आरंभ हो जाती है। पं. लखमीचन्द के सांगों में भी संयुक्त परिवार प्रणाली देती है। 'नौटंकी' सांग में फूलसिंह को अपनी भाभी मजाक करते हुए दिखाया :

'ये न्यूएं खुडकते रहा करैं जडैं बासण हों दो-चार, रूसग्या क्यूं।'

फूल सिंह अपने भाई-भाभी, माता-पिता के साथ मिलकर रहते है और एक दिन उसकी और भाभी की तकरार हो जाती है। प्रस्तुत सांग में सेठानी फूलसिंह की भाभी से कहती है कि

'पीहर सासरा दोनों कुलां की काण राखणी चाहिए।
देवर जेठ पित्तसरे ससुर की काण राखणी चाहिए।
सास नणन्द बड़ी छोटी सब मैं जाण राखणी चाहिए।'

संयुक्त परिवारों में सास बहू में तकरार आम बात है। प्राचीनकाल से सास और बहू में सदैव झगड़ा होता आया है। घर में सास को बहू को फूटी आँख नहीं भाती। परन्तु कई परिवारों में सास अपनी बहू को बेटी के समान समझती है। 'सत्यवान-सावित्री' सांग में सास अपनी बहु से बहुत प्रेम और स्नेह रखती है।

'आ री बहू, दिल प्यारी बहू, पुचकारी बहू, झटछाती है लाल्यी।
बहू तेरा कंचन केसा रूप, खिल रही सूरज केसी धूप, तेरे पै राजी सै मेरा भूप।
सिर हाथ धरया, घणा प्रेम भरया जब नहीं सरया बहू गोदी मैं ठाल्यी।'

दाम्पत्य सम्बन्ध

पति-पत्नी के बिना परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती है। इन्हीं के प्रेमपूर्वक मिलन से परिवार बनता है। परिवार की धूरी इन दोनों के चारों ओर ही घूमती है। पौराणिक आख्यानों में भी पति-पत्नी का वर्णन मिलता है। पं. लखमीचन्द के पति-पत्नी के सम्बन्धों में निकटता और टकराहट का तो वर्णन किया ही है, साथ ही पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिखराव किस प्रकार आता है इसका वर्णन भी अपने सांगों में किया है।

'कितना तेज कर्म लेरसी सै ल्या कर्म देखल्यूं तेरा।
जै पतिव्रता बणती हों तौल्या धर्म देखल्यूं तेरा।'

हरिश्चन्द्र के वचन के कारण अपनी सारी सुख-सुविधाएं त्याग देती है और बिकने के लिए भी तैयार हो जाती है :

राजा :

'मदनावत तू ध्यान हरि मैं धरिए
मैं कहर्या सूं गोरी मत वचनां तै किरीए
मनैं नहीं पिछाणी गिल्ला मतना करिए।'

रानी :

'पार गए जिसनै लिया ईश्वर का शरणा सै।
पिया मरण तै आगै और बता के डरणा सै।
जै नहीं पिछाणी तै गिल्ला के करणा सै।'

जब हरिश्चन्द्र और रानी बिछुड़ जाते है और काफी समय के पश्चात मिलते हैं तो राजा उसे पहचान नहीं पाता। और जब पहचान लेता है तो उसे क्षमा याचना करता है। रानी मदनावत भी उसे क्षमा कर देती है। इसी तरह 'सेठ ताराचन्द' सांग में और 'चाप सिंह' उनकी रानियां उन्हें माफ कर देती है :

'मनै टापू के मां रह कै सबर का मुक्का मार लिया।
फिर दिल्ली आकै जमना जी पै धूणा डार लिया।'

चाप सिंह अपनी पत्नी पर शेरखां के कारण शक कर बैठता है, लेकिन वह अपनी चतुराई के बल पर स्वयं को निर्दोष साबित कर देती है। तब चाप सिंह उसकी बहादुरी पर कहता है कि

'बोलिए मुंह खोलिए हो लिए उरै नै गौरी ल्या लाड करूं ले तेरे।'

नारी यदि अपनी पर आ जाती है तो वह बुरे से बुरा काम करने से पीछे नहीं हटती। 'पूरणमल' सांग में पं. लखमीचन्द यही सन्देश देने का प्रयत्न करते है। वह पूरणमल पर बदनीयत होने का इल्जाम लगाती है, लेकिन वह स्वयं पूरणमल नौवन पर मोहित है :

'पिया मेरे जिसनै कहै सै वो मनै बहू बणगी चाहवै सा।'

आधुनिक युग में भी ऐसी दुष्चरित्र की स्त्रियां है जो ऐसे कुकृत्य करके परिवार को बर्बाद कर देती है। जब पति-पत्नी के सम्बन्धों में मनमुटाव आ जाता है तो जिन्दगी बोझ सी लगने लगती है।

प्राचीनकाल से अनमेल विवाह की प्रथा चली आ रही है। पहले राजा-महाराज, बादशाह और धनी व्यक्ति अनमेल विवाह कर लेते थे। प्राचीन समय में संयुक्त परिवार हुआ करते थे। सभी मिलकर एक इकाई की तरह रहे थे। सबसे वृद्ध व्यक्ति घर का मुखिया होता था। वह जो भी फैसला लेता था। उसे सभी सहर्ष स्वीकार कर लिया करते थे। अनमेल विवाहों का वर्णन पं. लखमीचन्द के अनेक सांगों में आया है। 'पूरणमल' सांग में नूणादे रानी अपने अनमेल विवाह के बारे में बताती है

'बूदे बालम कै गल लादी, मेरे कसर भाग मैं रहती।
मेरी पूरणमल तै जोर मिलै थी, मैं भूल के बेटा कहगी।
बेटे आला हरक राभ मत फेर कढाइए फिरकै ।
इश्क निशाना लग्या जिगर पै मुश्किल मिलै दवाई।
बेटे आला ख्याल भूलगी कुछ ना दिया दिखाई।'

अनमेल विवाह के कारण भी परिवार में मन-मुटाव होने लगता है। क्योंकि आयु का अन्तराल होने के कारण दोनों एक दूसरे की भावनाओं पूर्णतः से समझ नहीं पाते।

'मेरी तेरे पिता के संग मैं जोड़ी ना मिलती।'

आधुनिक काल में अनमेल विवाह की समस्या कम रह गई है। आज सभी अपने बेटे या बेटी का विवाह एक दूसरे को देखने के बाद ही करते हैं। लेकिन इसके पश्चात् भी कहीं-कहीं ऐसे विवाह देखने को मिल जाते है। ऐसे विवाह लालच के वशीभूत होकर भी कर लिए जाते है। जिसके परिणाम बाद में भूगतने पड़ते हैं।

विवाह से पूर्व स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का प्रचलन प्राचीनकाल से रहा है। उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक सभी में विवाह से पहले किसी न किसी से प्रेम सम्बन्ध रहे है। राजा-महाराजा के राजकुमार तो किसी पर भी मोहित हो जाते थे और उनके प्रेम में पड़कर कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते है। इसी प्रकार विवाहहेतर है जब विवाह के बाद किसी नर-नारी के संबंध पर पुरुष या नारी से हो जाते हैं। हमारे समाज ने ऐसे सम्बन्धों को कभी मान्यता नहीं दी है। पं. लखमीचन्द जी ने भी अपने सांगों में ऐसे सम्बन्धों का विरोध किया है। 'हीर-रांझा' सांग में पं. लखमीचन्द ने विवाहपूर्व प्रेम सम्बन्धों का सजीव अंकन किया है :

'करके आई ओट मै सुणिए रांझे पीर।
भोजन ले रही आपका खड़ी पास मै हीर।
उठ खड्या हो रांझे पाली जड़ मैं हीर खड़ी तेरी।
दूध-मलाई खांड गेर कै तेरी खातिर लेरी।
तीन जन्म तक जन्म लिया और तेरा मेरा प्यार रहा।
मैं लैला बणग्यी तूं मजनूं बणकै प्रेम मैं ताबेदार रहा।
इब तूं रांझा मैं हीर बणी यो देखलियां संसार रहा।
तीन जन्म तै पाक मोहब्बत तेरी गैल्यां सै मेरी।'

इसी तरह 'सत्यवान-सावित्री' सांग में भी सावित्री सत्यवान को जंगल में देखती है और उस पर मोहित हो जाती है वह अपने घर जाकर पिता जी से उससे विवाह करने की बात कहती है। उसके पिता उसकी जन्म कुंडली ज्योतिष को दिखाते है। ज्योतिष उसके पति की शीघ्र मृत्यु विषय में बातें है। लेकिन सावित्री कहती है कि मैं शादी करूंगी तो केवल सत्यवान से चाहे कुछ भी हो :

'मेरे सिर पै झूठा मन्दा दोष क्यू धरो।
सत्यवान से पति मेरा जीओ चाहे मरो।
बेशक मरो जगत् मरता है, सच्चे कहै बिना ना सरता है।
दरख्त एक बार गिरता है, डुबो चाहे तिरो
एक बर ही कन्या का दान, दान की होती एक जवान।
मेरा पति सत्यवान ज्यादा दुःखी ना करो।'

पं. लखमीचन्द के अनेक सांगों में विवाहहेतर सम्बन्धों का भी चित्रण हुआ है।

'कीड़े पड कै मरज्यागा तनै करल्यी बहू भाणजे की।
बेईमान तनै अपणै घर में धरल्यी बहू भाणजे की।

विपता पडी मुझ बन्दे के मैं, तू पड़ग्या बुरे धन्धे के मैं।
बेईमान तेरे फन्दे के मैं घिरल्यी बहू भाणजे की।'

विवाहोत्तर सम्बन्ध बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है। आधुनिक युग में ऐसे संबंध बहुत ज्यादा बढ़ते जा रहे है। हम आये दिन अखबारों में ऐसे घृणित सम्बन्धों के बारे में पढ़ते है।

नारी जीवन यात्रा में पत्नी रूप सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपादेय है। जिस देश में नारी को पूज्य माना जाता रहा है। उसी देश की नारी जीवन की ये विडम्बना भी है कि उसे पशुओं की तरह खरीदा या बेचा भी जाता रहा है जिस कारण अनेकों सामाजिक विसंगतियां जन्म ले लेती हैं जिनसे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है। पं. लखमीचन्द ने भी अपने सांगों के माध्यम से इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है 'राजा हरिश्चन्द्र' में हरिश्चन्द्र की पत्नी मदनावत को एक ब्राह्मण खरीद लेता है और अपने घर में नौकरानी का काम करवाने लगता है :

'नौकर रहें थे हजार दास चरणां के।
मरण तै आगै और बता डरणां कै।
राणी पहोंच गई जडै जल बहते वरणा के।'

रानी मदनावत को तरह-तरह के कष्ट उठाने पड़ते है वह नदी से जल भरने से लेकर जंगल से लकड़ी काटने तक का काम ब्राह्मण के घर करने लगी।

पं. लखमीचन्दकृत सांग 'चीर पर्व' में जुए के खेल में पांडव अपनी पत्नी द्रौपदी को हार जाते हैं।

'तेरे हार जीत की बात चाल तेरे पांचों पति बतावैंगे।
हुकम तै जाग्या सोया करैगी, दासी बण पां धोया करैगी।
सुख नै रोया करैगी दिन रात, हम पुचकारेंगे नही मनावैंगे
कै तै म्हारे दिए दण्डनै खेगी, आणकै कहणा जो कह लेगी।
कै ते उत्तर देगी पंचात, ना तै हम दासी जरूर बणावैंगे।'

आधुनिक युग में भी ऐसे अनेक उदाहरण देखने के मिल जाते हैं जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को किसी दूसरे को कुछ कागज के टुकड़ों के लिए बेच देते है। या फिर तरक्की पाने की चाह लालच में अपनी पत्नी को किसी दूसरे के हवाले कर देते है। आधुनिक युग में तो यह एक विकट समस्या बनती जा रही है। आज पुरुष अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए अपनी का अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

समाज के परिवर्तित मूल्यों के युग में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। विवाह स्त्री और पुरुष के बीच पवित्र रिश्ता जोड़ता है। उनमें परस्पर प्रेम के लिए आयु, शिक्षा एवं बौद्धिक स्तर की समानता का होना नितान्त आवश्यक है। पहले जो

स्त्री घर की चारदीवारी में बन्द रहती थी तथा आर्थिक रूप से पति पर निर्भर करती है। आज वही स्त्री आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने के साथ-साथ पुरुष दासता से भी मुक्ति चाहती है। मूल्यों के संक्रमण काल में नारी ने अपनी स्थिति को पहचान लिया हैं। इसलिए वह स्वतन्त्र एवं निजि विचारों को अधिक महत्त्व देने लगी हैं। पं. लखमीचन्द के सभी सांग पौराणिक है और उनमें भी नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है। 'चीर पर्व' सांग में पाडवों द्वारा द्रौपदी को दाँव पर लगाना भी शोषण का एक रूप है।

'कैरों नै छुटा दिया तेरा पटराणी का नाम।
दासियों मैं मिलकै राणी करणा होगा काम।
तेंरे पतियां नै माल लुटा दिया, मिलकै जुआ सब छुटा दिया।
कैरों नै छुटा दिया तेरा ऐश और आराम।'

पं. लखमीचन्द जी ने नारी जीवन विडम्बना का यथार्थ अंकन किया। आधुनिक युग में मानव स्त्री का अनुचित लाभ लेने से नहीं चूकता। इसी प्रकार का चित्रण पं. लखमीचन्द के 'सेठ ताराचन्द' सांग में भी दिखाई देता है :

'मरिए चाहे जीवती रहिए मान हवाले करदी।'

इसी प्रकार 'राजा हरिश्चन्द्र' सांग में हरिश्चन्द्र अपनी पत्नी और बेटे को रोहताश अपने से अलग कर देता है, जहाँ एक ब्राह्मण मदनावत और रोहताश को खरीद लेता है। वह दोनों को काम पर लगा देता है :

रानी :

'सुख की समो सौ सौ कोस भागगी।
दुःख की वेदन तन मैं घणी जागगी।'

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] डॉ. कृष्ण चन्द्र शर्मा, लोककवि अहमद बख्श और उनकी रामायण, सूर्यभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।
[2] श्रीकृष्ण दास, लोकगीतों की सामाजिक व्यवस्था, प्रथम संस्करण, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1956 ।
[3] डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1957 ।
[4] डॉ. कृष्णदेव शर्मा, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र ।
[5] डॉ. केशो राम शर्मा, गन्धर्व पुरुष लखमीचन्द, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, 2017 ।
[6] के.सी. यादव, हरियाणा प्रदेश का इतिहास, मनोहर पब्लिकेशन, अंसारी रोड़, दिल्ली, 1981 ।
[7] के.सी. यादव, हरियाणा का इतिहास एवं संस्कृति, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1986 ।